IJMRT: Volume (6), Issue 4, 2024
International Journal of Multidisciplinary Research Transactions
(A Peer Reviewed Journal)
www.ijmrt.in

ISSN (Print):2663-2381
ISSN (Online):2663-4007

टैगोर का शैक्षिक दर्शन और भारत में उनका प्रकृतिवाद:एक दृष्टिकोण

डा. ओम प्रकाश यादव[1*], डा. राकेश कुमार [2]

[1] *सहायक प्रवक्ता, शिक्षा शास्त्र विभाग, रजत कॉलेज लखनऊ, भारत.*
[2] *असिस्टेंट प्रोफेसर, रजत कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन एंड मैनेजमेंट, लखनऊ, भारत.*

*Corresponding author

DoI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10975329

सारांश

टैगोर ने अपने अनुभव से शिक्षा के सिद्धांतों की जांच की है। उन्होंने रूसो के विचारों, फ्रोबेल की किंडरगार्टन प्रणाली और जान डी,वी के विचारों से भी परिचित कराया, फिर भी उन्होंने अपने शांतिनिकेतन प्रयोग को शुरू करने से पहले शिक्षा के सिद्धांतों को त्याग दिया। उनके अनुसार शारीरिक और बौद्धिक विकास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। वे किताबी ज्ञान का विरोध करते हैं और स्वतंत्र और प्राकृतिक सोच का समर्थन करते हैं.

मुख्य शब्द: टैगोर,शैक्षिक दर्शन, प्रकृतिवाद , बौद्धिक विकास , प्राकृतिक सोच.

1. प्रस्तावना

टैगोर को प्रकृति से प्यार था, इसलिए उन्होंने कभी भी चार दीवारों से घिरे स्कूल के कृत्रिम वातावरण का समर्थन नहीं किया। उनके अनुसार पारंपरिक स्कूल जेल की तरह हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों में ताजगी और इंद्रियों की जीवंतता का उपहार है। वे प्रकृति के साथ ही स्वाभाविक बन सकते हैं। उन्होंने बच्चों के जीवन में स्कूल के माहौल को बहुत महत्व को बताया क्योंकि स्कूल का माहौल आत्मा की संवेदनशीलता को विकसित करता है और मन को स्वतंत्रता देता है। टैगोर के अनुसार एक आदर्श स्कूल प्राकृतिक परिवेश में स्थित होना चाहिए। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने प्रकृतिवाद के पक्ष में कलकत्ता में 'शांतनिकेतन' नामक विद्यालय की स्थापना की।

Copyrights@IJMRT

टैगोर ने अनुशासन पर जोर दिया। टैगोर के लिए विद्यालय एक ऐसा खुला घर था जिसमें छात्र और शिक्षक एक होते हैं और साथ मिलकर अपना जीवन जीते हैं। उन्होंने आगे टिप्पणी की कि अनुशासन बच्चे पर थोपा नहीं जाना चाहिए बल्कि बच्चे को अपने मामलों को स्वयं प्रबंधित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए

टैगोर ने जोर दिया कि शिक्षा प्राकृतिक परिवेश की गोद में दी जानी चाहिए। टैगोर स्वयं कहते हैं, "मेरे मन में एक ऐसे विद्यालय का आदर्श था, जो एक घर और एक मंदिर दोनों हो, जहाँ शिक्षण पूजापूर्ण जीवन का एक अंग हो तथा प्रत्येक दिन ईश्वर के साथ संवाद का माध्यम हो l

1.1. शिक्षा का उद्देश्य

टैगोर ने अपने निबंधों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा के उद्देश्यों पर बात की है। एक बंगाली निबंध में उन्होंने छात्रों के खराब स्वास्थ्य पर दुख व्यक्त किया है। उन्होंने स्वस्थ शरीर को बहुत महत्व दिया है। इस दृष्टि से उन्होंने शारीरिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य माना है। उनके अनुसार शिक्षा का दूसरा उद्देश्य बौद्धिक विकास होना चाहिए। वे किताबी शिक्षा का विरोध करते हैं और स्वतंत्र सोच के पक्षधर हैं। सोचने और कल्पना करने की शक्ति का विकास स्मृति से अधिक महत्वपूर्ण है। अनुशासन के महत्व का विश्लेषण करते हुए वे नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर देते हैं। वे युवाओं को तपस्या और दृढ़ निष्ठा की भावना विकसित करने की सलाह देते हैं। टैगोर प्रथम श्रेणी के अंतर्राष्ट्रीयवादी थे। उन्होंने पूर्व और पश्चिम के बीच एक अद्भुत संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उनके द्वारा स्थापित विश्वभारती वास्तविक अर्थों में विश्वभारती है। इस दृष्टि से वे अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास में रुचि लेते दिखाई देते हैं।

1.2. पाठ्यक्रम

टैगोर ने हमें व्यापक पाठ्यक्रम बनाने की सलाह दी है। तदनुसार उनके अनुसार पाठ्यक्रम इतना व्यापक होना चाहिए कि उसमें बालक के जीवन के सभी पहलुओं का विकास हो सके। टैगोर ने निश्चित पाठ्यक्रम की कोई योजना नहीं बनाई। उन्होंने जगह-जगह सांस्कृतिक विषयों के महत्व के बारे में सामान्य विचार प्रस्तुत किए हैं। विश्वभारती में इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य, प्रकृति अध्ययन की शिक्षा के अलावा नाट्यशास्त्र, प्रादेशिक अध्ययन, भ्रमण, चित्रकला, मौलिक रचनाएँ, संगीत और नृत्य की शिक्षा की विशेष व्यवस्था है।

1.3. शिक्षण की विधियाँ

टैगोर बालक की असीमित ऊर्जा और जिज्ञासा में विश्वास व्यक्त करते हैं। वे बालक की वैयक्तिकता के पच्छधर थे, नृत्य, हँसना, चिल्लाना, ताली बजाना और नाटक करना सीखने और सिखाने की महत्वपूर्ण विधियाँ और तकनीकें हैं l अपने निबंध में टैगोर ने उस समय प्रचलित शिक्षा पद्धतियों की आलोचना की और उन्हें काल्पनिक, विदेशी, किताबी और अनुपयुक्त बताया। वे शिक्षा को भारतीय संस्कृति पर आधारित करना चाहते थे और उन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का समर्थन किया। उन्होंने संगीत, नाटक और कला पर विशेष जोर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय विचारों का समर्थन करने के बावजूद, उन्होंने मानवतावादी दृष्टिकोण को ध्यान में रखा और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करना चाहते थे। उन्होंने प्रेम और सार्वभौमिकता के पाठ पढ़ाए और उन्हें उच्च शैक्षिक मूल्यों के रूप में स्वीकार किया

2. टैगोर के प्रकृतिवाद की पृष्ठभूमि

स्वभाव से, टैगोर को प्रकृति से प्रेम था। प्रकृतिवाद के प्रति उनका प्रेम उन स्कूलों के कृत्रिम और अप्राकृतिक वातावरण के कारण और मजबूत हुआ, जहाँ वे पढ़ते थे। स्कूल में टैगोर का जीवन सुखी

नहीं था। वे खुद को 'पिंजरे में बंद तोते' की तरह महसूस करते थे। टैगोर खुद को 'मृत दिनचर्या और शैक्षणिक संस्थानों की पढ़ाई' के साथ समायोजित करने में असमर्थ थे। उनके शिक्षकों ने घोषणा की कि वे 'पढ़ाई के लिए अयोग्य हैं। टैगोर ने इन किताबों से सीखने की फैक्टरियों से बचकर निकलना अपने आप को सौभाग्यशाली माना। बाद में उन्होंने कहा, "मेरे शिक्षण का जिम्मा जिन गुरुओं और पंडितों पर था, उन्होंने जल्द ही इस कृतघ्न कार्य को छोड़ दिया और महसूस किया कि इस लड़के को कभी भी शिक्षा के सामान्य मार्ग पर नहीं ले जाया जा सकता।" टैगोर ने स्कूल को बहुत ही असहज स्थान माना, "स्कूल में कोई विशेष परेशानी नहीं थी। फिर भी, यह एक स्कूल था। कमरे निर्दयी थे, इसकी दीवारें पहरेदारों की तरह खड़ी थीं। इसमें घर जैसा कुछ नहीं था, उन्होंने बच्चों के जीवन में स्कूल के माहौल के महत्व को रेखांकित किया, जिनका मन मधुमक्खी की तरह अपने आस-पास के वातावरण से भोजन और पोषण प्राप्त करने की शक्ति रखता है। सांस्कृतिक माहौल मन को समृद्ध जातीय अभिप्राय, गौरवशाली परंपरा और युगों के केंद्रित ज्ञान के प्रति संवेदनशील बनाता है। स्कूल के माहौल में आत्मा की संवेदनशीलता भी विकसित होनी चाहिए और मन को अज्ञानता और उदासीनता के बंधन से मुक्त करना चाहिए।

3. शिक्षा में टैगोर का प्रकृतिवाद

3.1. शिक्षा के उद्देश्य: प्रकृति के साथ सामंजस्य:-टैगोर के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य वह है जो हमें केवल जानकारी न दे बल्कि हमारे जीवन को अस्तित्व के साथ सामंजस्य में लाए। उन्होंने कहा कि सहानुभूति की इस शिक्षा को न केवल स्कूलों में व्यवस्थित रूप से नजरअंदाज किया जाता है, बल्कि इसे बुरी तरह से दबा दिया जाता है। टैगोर इस बात पर अफसोस जताते हैं कि बचपन से ही हमारी आदतें बन जाती हैं और ज्ञान इस तरह से महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारा जीवन प्रकृति से दूर हो जाता है और हमारे दिमाग और दुनिया हमारे दिनों की शुरुआत से ही विरोध में खड़े हो जाते हैं। इस प्रकार, शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य जिसके लिए हम तैयार होकर आते हैं, उपेक्षित हो जाता है, और हमें मुट्ठी

भर जानकारी खोजने के लिए दुनिया से दूर कर दिया जाता है। उनकी भूख महाकाव्यों के लिए है, लेकिन उन्हें तथ्यों और तिथियों के इतिहास से भर दिया जाता है।

3.2. प्राकृतिक परिवेश में आदर्श विद्यालय: तपोवन (वन कॉलोनी) टैगोर के अनुसार, वन हमें शांति और उत्कृष्ट भावना की पवित्रता और तपस्या और त्याग के शुद्ध आनंद का संदेश देते हैं। जंगल में प्रकृति एक भव्य परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है जिसके खिलाफ सभी वस्तुएं, सभी भावनाएं, अपने अतिरंजित आकार को खो देती हैं और तपोवन में उचित अनुपात ग्रहण करती हैं। टैगोर ने बच्चों के जीवन में स्कूल के माहौल के महत्व को बताया, जिनका मन, पेड़ की तरह, भोजन इकट्ठा करने की शक्ति रखता है और समृद्ध जातीय विरासत, गौरवशाली परंपराओं और युगों के केंद्रित ज्ञान के प्रति संवेदनशील है। स्कूल के माहौल में आत्मा की संवेदनशीलता भी विकसित होनी चाहिए और मन को अज्ञानता और उदासीनता के बंधन से मुक्ति मिलनी चाहिए। मनुष्य और मनुष्य के बीच एक आध्यात्मिक बंधन है, जिसमें प्रकृति का छात्रों पर उत्कृष्ट प्रभाव पड़ता है। संगीत, गीत, नृत्य, नाटक और अन्य कलात्मक गतिविधियाँ दैनिक दिनचर्या हैं। टैगोर ने इसे अपने शब्दों में समझाया है। अंगों के उपयोग में प्रशिक्षण, प्रश्न पूछने की भावना का विकास। चिंतन और अवलोकन, पेड़ों, पक्षियों, जानवरों और प्रकृति की विविध घटनाओं में रुचि और आनंद की खेती, दैनिक उपयोग की वस्तुओं के निर्माण में अनुभव, अपने रहने के कमरे और आस-पास को साफ रखने की आदत, शरीर, पोशाक और व्यक्तिगत व्यवहार दोनों के पर्याप्त पालन के माध्यम से स्वच्छता का सुंदर अभ्यास, खाने में स्वस्थ अनुशासन, शारीरिक व्यायाम और आराम और शारीरिक और मानसिक शक्ति का सावधानीपूर्वक रखरखाव ,ये इस आश्रम के जीवन के लिए आवश्यक हैं।

4. निष्कर्ष

टैगोर का शिक्षा दर्शन व्यवहारिक वास्तविक जीवन पर आधारित दर्शन है जो किताबों के ज्ञान के बजाय जीवन के स्वाभाविक नैसर्गिक अनुभव को महत्व देता है, उन्होंने अपने वैचारिकी को शांतिनिकेतन के द्वारा व्यवहारिक रूप प्रदान करने की कोशिश की है, और परंपरागत शैक्षिक दृष्टिकोण को त्याग कर स्वतंत्र एवं प्राकृतिक सोच का समर्थन किया है इसीलिए कृत्रिम वातावरण से दूर प्राकृतिक वातावरण को सर्वोत्तम शैक्षिक माहौल स्वीकारा है, टैगोर ने विद्यालय को घर एवं मंदिर का मिला-जुला रूप माना है जिसमें बालक अपने प्रत्येक शैक्षणिक कार्यों को पूजा के रूप में करते हुए प्रत्येक दिन को ईश्वर के साथ संवाद के रूप में स्वीकारता है, भारतीय परिदृश्य में टैगोर का शैक्षिक दर्शन प्रासंगिक तो है लेकिन अपनी सार्वजनिक स्वीकार्यता के लिए संघर्ष कर रहा है।

REFERENCES

[1]. चंद्रा, जगदीश-शिक्षा का दार्शनिक आधार - अंशह पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
[2]. अग्रवाल, जे.सी.-उभरते भारतीय समाज में शिक्षा शिप्रा प्रकाशन पट्टरगंज दिल्ली
[3]. टैगरे, आर.एन.-राष्ट्रवाद-न्यू यॉर्क, मैकमिलन एंड कंपनी
[4]. वर्मा, वी.पी.-शिक्षा के दर्शन में अध्ययन। लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
[5]. पांडे, आर.एस. उभरते भारतीय समाज में शिक्षा- अग्रवाल प्रकाशन आगरा।
[6]. राधाकृष्णन, एस.-रविन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन, लैंडन - जॉर्ज एलन और अनविन लिड
[7]. पांडे आरएस-शिक्षा-अग्रवाल प्रकाशन आगरा के प्राचार्य।